This question paper contains 8 printed pages]

133-R

B.A. (Part III) Examination, 2022

(For Regular/Ex Candidates)

हिन्दी साहित्य

Paper II

(नाटक और निबंध)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

*इस प्रश्न-पत्र में **तीन** खण्ड निम्न प्रकार हैं :*

खण्ड 'अ' **पूर्णांक-10**

*इस खण्ड में **एक** अनिवार्य प्रश्न है जिसमें **10** भाग हैं। प्रत्येक भाग का उत्तर **20** शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड 'ब' **पूर्णांक-50**

*इस खण्ड में **10** प्रश्न अथवा व्याख्याएँ हैं। प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न अथवा व्याख्या का चयन करते हुए कुल **5** प्रश्नों अथवा व्याख्याओं के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न अथवा व्याख्या का उत्तर **250** शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों अथवा व्याख्याओं के अंक समान हैं।*

खण्ड 'स' **पूर्णांक-40**

*इस खण्ड में **4** प्रश्न हैं, प्रश्नों के उपभाग हो सकते हैं। इस खण्ड में एक इकाई से अधिकतम एक प्रश्न होगा। कुल **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **500** शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-अ

1. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं :

   (*i*) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सम्पादित किन्हीं **दो** पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

   (*ii*) जयशंकर प्रसाद के किन्हीं **दो** ऐतिहासिक नाटकों के नाम लिखिए।

   (*iii*) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी किस युग के निबंधकार हैं ?

   (*iv*) 'प्रणाम' निबंध में किस महापुरुष के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की गई है ?

   (*v*) सौन्दर्यबोध और शिवत्वबोध निबंध के लेखक कौन हैं ?

https://pyqielo.com

(vi) 'हल्दी-दूब' और 'दधि-अच्छत' निबंध में लेखक ने दूर्वा को भारत में मांगलिक क्यों बताया है ?

(vii) निबंध का मौलिक अर्थ क्या है ?

(viii) मोहन राकेश के **दो** नाटकों के नाम लिखिए।

(ix) हिन्दी रंगमंच का जन्मदाता किसे माना जाता है ?

(x) 'भारत दुर्दशा' नाटक के लेखक का नाम लिखिए।

खण्ड-ब

इकाई-I

सन्दर्भ एवं सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2. हाय! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इसके उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है, उसे कौन जगा सकेगा ? हाँ दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं। जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है। कल जो हाथी पर सवार फिरते थे आज नंगे पाँव वन-वन की धूलि उड़ाते फिरते हैं। 10

अथवा

3. रोष है, हाँ, मैं रोष से जली जा रही हूँ। इतना बड़ा उपहास··· धर्म के नाम पर स्त्री की आज्ञाकारिता की यह पैशाचिक परीक्षा ····· मुझसे बलपूर्वक ली गयी है। पुरोहित! तुमने तो मेरा राक्षस-विवाह कराया, उसका उत्सव भी कितना सुन्दर है। यह जनसंहार देखो, अभी उस प्रकोष्ठ में रक्त से सनी हुई शकराज की लोथ पड़ी होगी। कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे और इस रक्तधारा में तिरती हुई मैं राक्षसी-सी साँस ले रही हूँ। तुम्हारा स्वस्त्ययन मुझे शान्ति देगा ? 10

इकाई-II

सन्दर्भ एवं सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

4. कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म-काल में उसका जो जीवन बीता,

https://www.uokonline.com

वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरान्त फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार उसके एक-एक अंग की योजना होती है।

अथवा

5. साहित्य को उसकी बाह्य रूपात्मकता में तोलना-मापना सहज है। किसने कितने उपन्यास लिखे, किसने कितने नाटक, किसके महाकाव्यों का परिणाम क्या है, किसके गीतों की संख्या कितनी है, किसकी शैली कैसी है, किसका छन्द कैसा है, आदि में जो तोल-नाप है वह साहित्य की आत्मा को नहीं तोलता-नापता। ऊँचे-नीचे कगार या सूखे हरे तट नदी की सीमा बनते हैं, पर नदी नहीं बना सकते। 10

इकाई-III

सन्दर्भ एवं सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

6. विरोधाभास यह था कि इसी समय उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों में भारतीय मानस में एक नितान्त नई भावना का

उन्मेष भी हुआ था। स्वतंत्रता की भावना, अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने का स्वप्न, एक अखण्डित राष्ट्रीय अस्मिता को पाने की आकांक्षा, इन समस्त अनुभूतियों ने भारतीय मानस को बीसवीं सदी के आरम्भ में आलोकित किया था। समय के साथ ये समस्त आकांक्षाएँ एक विराट-राष्ट्रीय आंदोलन में मुखरित हुई थीं। यह एक नियतिपूर्ण ऐतिहासिक क्षण था जब प्रश्न सिर्फ यह नहीं था विदेशी सत्ता से छुटकारा कैसे पाया जाए बल्कि यह कि स्वतंत्र भारत का भविष्य किन आदर्शों और मर्यादाओं द्वारा निर्धारित किया जाएगा। 10

अथवा

7. चैत्र पूर्णिमा को चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र का भोग करता है। इसी से यह 'चैत्य' कहा जाता है। ठीक वैसी ही जैसे चन्द्र के उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र से संयोग होने के कारण फाल्गुन संज्ञा उदित हुई। मास की पूर्णिमा को चन्द्र मित्र नक्षत्र से जुड़ा होता है। उसी नक्षत्र के आधार पर भारतीय मासों का नामकरण हुआ है। चित्रा से चैत्र, विशाखा से वैसाख, ज्येष्ठी

https://pyqlele.com

से ज्येष्ठ..... इत्यादि। फाल्गुन के बाद आने वाले चित्रा लांछित चैत्र मास में ही वसंत ऋतु या मधु ऋतु जो कहें. पूर्ण अभिव्यक्ति होती है। पक्के मीठे दाँतों में आम की गदराई मंजरियों में अचानक जी उठी हरी-हरी घासों में रात-विरात कूकती कोयल में और सबसे बढ़कर चाँदनी रातों में। 10

इकाई-IV

8. नाटक के तत्वों पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

9. निबंध के प्रकारों को संक्षेप में समझाइए। 10

इकाई-V

10. नाटक एवं रंगमंच के संबंध को स्पष्ट कीजिये। 10

अथवा

11. ललित निबंध किसे कहते हैं ? विशेषता बताते हुए स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 10

12. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक नायिका प्रधान है या नायक प्रधान, स्पष्ट करते हुए ध्रुवस्वामिनी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 20

13. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबंध-कला पर प्रकाश डालते हुए निबंधों की विशेषता लिखिए। 20

14. 'भोलाराम का जीव' व्यंग्य का भाव अपने शब्दों में लिखते स्वतंत्र भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही की समीक्षा कीजिए। 20

15. हिंदी निबंध के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए। 20

https://www.uokonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से